

बिल्ली को पकड़ो



पंजाब के एक जिन्दादिल गाँव में, अमर नाम का एक लड़का रहता था, जो अपनी चमकदार आँखों और दयालु हृदय के लिए जाना जाता था, वह अपने बगीचे में खुशी से खेल रहा था।



एक सुनहरे दिन, अमर को गाँव के किनारे पर एक छोटी सी बिल्ली मिली,
जो खोई हुई थी और उसकी आँखें दयालुता की तलाश में थीं।



सहानुभूति से भरे हृदय से अमर ने बिल्ली से कहा, चिंता मत करो,
छोटी दोस्त, मैं तुम्हारा ख्याल रखूंगा।



अमर अपने माता-पिता से मदद पाने के लिए जल्दी से घर पहुंचा, बिल्ली उसकी गोद में सुरक्षित थी, उसका दिल उम्मीद के लिए दौड़ रहा था।



ਅਮਰ ਨੇ ਕਹਾ, “ਮਾँ, ਪਿਤਾਜੀ,” ਮੁਝੇ ਏਕ ਬਿਲੀ ਮਿਲੀ ਜਿਸੇ ਹਮਾਰੀ ਮਦਦ ਕੀ ਜ਼ਰੂਰਤ ਥੀ। ਉਸਕੇ ਮਾਤਾ ਪਿਤਾ ਨੇ ਸੇਵਾ ਕਰਨੇ ਕੇ ਅਵਸਰ ਕਾ ਸਵਾਗਤ ਕਿਆ, ਉਨਕੀ ਮੁਸਕੁਰਾਹਟ ਪ੍ਧਾਰ ਸੇ ਭਰੀ ਹੁਈ ਥੀ ।



साथ में, उन्होंने बिल्ली के लिए भोजन, पानी और एक आरामदायक स्थान प्रदान किया, और अमर को निःस्वार्थ सेवा की खुशी सिखाई।



जब बिल्ली बीमार महसूस करने लगी तो मुसीबत खड़ी हो गई, अमर ने उम्मीद के साथ सही नज़रिया बनाए रखने की शिक्षा को याद किया ।



दयालु पशुचिकित्सक की सहायता और उनकी प्यार भरी देखभाल से, बिल्ली ठीक होने लगी, जिससे अमर का घर उम्मीद और आभार से भर गया ।



बिल्ली, जो अब परिवार की एक प्यारी सदस्य है, अमर के घर को हंसी से भर देती है, और मिल जुल कर एक साथ रहने की खुशी को शामिल करती है।



अमर की दयालुता का काम पूरे गाँव में फैल गया, सभी के दिलों को सरल तुलना और समाज के साथ रहने की प्रेरणा दी ।



सिखों के दस गुरु साहिबान के नाम

- 1) गुरु नानक देव जी
- 2) गुरु अंगद देव जी
- 3) गुरु अमरदास जी
- 4) गुरु रामदास जी
- 5) गुरु अरजन देव जी
- 6) गुरु हरगोबिंद साहिब जी
- 7) गुरु हरिराइ जी
- 8) गुरु हरि क्रिशन जी
- 9) गुरु तेग बहादुर जी
- 10) गुरु गोबिंद सिंह जी

मूल मंत्र पाठ

ॐ सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुरप्रसादि ॥

अकाल-पुरख एक है, जिसका नाम 'अस्तित्व वाला' है जो सृष्टि का रचनहार है, (करता है) जो सब में व्यापक है, भय से रहित है (निर्भय), वैर से रहित है (निर्वैर), जिसका स्वरूप काल से परे है, (भाव, जिसका शरीर नाश-रहित है), जो योनियों में नहीं आता, जिसका प्रकाश अपने आप से हुआ है और जो सत्गुरु की कृपा से मिलता है।

॥ जपु ॥

जाप करो। (इसे गुरु की वाणी का शीर्षक भी माना गया है।)

आदि सचु जुगादि सचु ॥

निरंकार (अकाल पुरुष) सृष्टि की रचना से पहले सत्य था, युगों के प्रारम्भ में भी सत्य (स्वरूप) था।

है भी सचु नानक होसी भी सचु ॥१॥

अब वर्तमान में भी उसी का अस्तित्व है, श्री गुरु नानक देव जी का कथन है भविष्य में भी उसी सत्यस्वरूप निरंकार का अस्तित्व होगा ॥ १ ॥

गुरु शब्द

पउड़ी ॥

पउड़ी॥

जा तू मेरै वलि है ता किआ मुहछंदा ॥

हे ईश्वर ! जब तू मेरे साथ है तो अब मुझे किसी पर निर्भर अथवा आश्रित होने की क्या आवश्यकता है।

तुधु सभु किछु मैनो सउपिआ जा तेरा बंदा ॥

सच तो यही है कि तूने सब कुछ मुझे ही दे दिया है और मैं एक तेरा ही सेवक हूँ।

लखमी तोटि न आवई खाइ खरचि रहंदा ॥

मैं बेशक कितना ही खाता एवं खर्च करता रहता हूँ, मगर धन-दौलत की किसी प्रकार की कमी नहीं आई।

लख चउरासीह मेदनी सभ सेव करंदा ॥

चौरासी लाख योनियों के सृष्टि के सब जीव तेरी ही उपासना करते हैं।

एह वैरी मित्र सभि कीतिआ नह मंगहि मंदा ॥

सब शत्रुओं को तूने मेरा मित्र बना दिया है और अब वे बिल्कुल भी मेरा बुरा नहीं चाहते।

लेखा कोइ न पुछई जा हरि बखसंदा ॥

जब परमात्मा क्षमावान् है तो फिर कर्मों का हिसाब कोई भी नहीं पूछता।

अनंदु भइआ सुखु पाइआ मिलि गुर गोविंदा ॥

गोविंद गुरु को मिलकर हमने परम सुख पा लिया है और मन में आनंद ही आनंद हो गया है।

सभे काज सवारिऐ जा तुधु भावंदा ॥७॥

अगर तू चाहता है तो सभी कार्य सिद्ध हो जाते हैं॥ ७॥

छोटे बच्चों के लिए सिख कहानी

बहुत समय पहले गुरु नानक नाम के एक बुद्धिमान और दयालु व्यक्ति रहते थे। वह छोटी उम्र से ही दूसरे बच्चों से अलग थे। वह विचारशील और देखभाल करने वाले, हमेशा दुनिया और उसमें रहने वाले लोगों के बारे में सोचते रहते थे। गुरु नानक एक ईश्वर में विश्वास करते थे और वे चाहते थे कि सभी लोग एक ईश्वर में विश्वास करें और समझें कि हम सभी एक समान हैं, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम कहाँ से आते हैं या कैसे दिखते हैं।

अपने ज्ञान को साझा करने के लिए उन्होंने कई स्थानों की यात्राएं की। उन्होंने लोगों को दयालु होना, जरूरतमंद लोगों की मदद करना सिखाया, और यह भी याद रखना सिखाया कि भगवान हमेशा हमारे साथ हैं। सिख धर्म की शिक्षाएँ इसकी नींव बनीं। उनकी शिक्षाओं में यह है कि सभी मनुष्य एक समान हैं, एक ही ईश्वर से पैदा हुए हैं। महिलाओं का सम्मान करें, वे हमें जन्म देती हैं। सिख तीन प्रमुख सिद्धांतों में विश्वास करते हैं। जिन्हें सिख धर्म की तीन बुनियाद भी कहा जाता है, जो इस प्रकार हैं:

1. ****नाम जपना (भगवान को याद करना):** ** सिख हर चीज में भगवान को याद करने में विश्वास करते हैं। वे भगवान का नाम दोहराते हैं और अच्छाई और प्रेम से भरा जीवन जीने की कोशिश करते हैं।
 2. ****किरत करनी (ईमानदारी से जीवन व्यतीत करना):** ** सिखों को कड़ी मेहनत और ईमानदारी से काम करना सिखाया जाता है। वे ईमानदारी से किए गए प्रयासों से अपना जीवन व्यतीत करने में विश्वास करते हैं, न कि किसी को धोखा देकर या अन्य को चोट पहुंचाकर।
 3. ****वंड छकना (दूसरों के साथ साझा करना):** ** सिख अपने पास जो कुछ है उसे दूसरों के साथ साझा करने में विश्वास करते हैं। चाहे वह भोजन हो, प्रेम हो या दया हो, सिखों को अपने आसपास के लोगों के साथ ये सब साझा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।
- गुरु नानक जी की शिक्षाएँ गुरुओं की एक पंक्ति तक पहुँचीं जिन्होंने सिखों का मार्गदर्शन करना जारी रखा। प्रत्येक गुरुओं ने सभी के लिए प्रेम, समानता और सम्मान के बारे में महत्वपूर्ण सबक साझा किए।

अंतिम गुरु गोबिंद सिंह जी ने सिखों को सम्पूर्ण रूप दिया। उन्होंने सिखों को लंबे बिना कटे बाल रखने, पगड़ी और दीन-दुखियों की रक्षा के लिए कृपाण धारण करने का आदेश दिया। गुरु गोबिंद सिंह जी ने गुरु ग्रंथ साहिब को गुरुपद प्रदान किया। यह ग्रंथ एक खज़ाना है क्योंकि इसमें न केवल गुरु भजनों का भंडार है इसके साथ-साथ अन्य धर्मों जैसे मुसलमानों और हिंदुओं के संतों के लिए उचित शब्द भी है। गुरु ग्रंथ साहिब को पढ़ने से यह सुनिश्चित हुआ कि हर कोई, चाहे उनकी पृष्ठभूमि कुछ भी हो, इसके पन्नों में से ज्ञान, प्रेम और मार्गदर्शन पा सकते हैं।

जैसे-जैसे सिखों ने अपनी यात्रा जारी रखी, उन्हें चुनौतियों का सामना करना पड़ा, लेकिन उन्होंने हमेशा अपनी गुरुओं की शिक्षा को याद रखा। वे एक मजबूत और प्रेमपूर्ण कौम बन गए, एक-दूसरे की ज़रूरत में मदद करने लगे।

सिख धर्म के हृदय में यह विश्वास है कि हर कोई एक समान है, प्रेम और दया से मार्गदर्शन करना चाहिए। तो, चाहे आप छह साल के हों या साठ साल के, सिखों की कहानी हमें अच्छा और दयालु बनना सिखाती है, हमेशा याद रखें कि प्यार और समानता दुनिया को एक बेहतर जगह बनाती हैं।